संगम युग का अनमोल समय कभी व्यर्थ नहीं गंवाना
अपना नाजुकपना त्यागकर खुद को सर्विसेबल बनाना
बनकर बाप के मददगार बनना ऊंच पद के अधिकारी
अपनी सहनशक्ति बढ़ाकर त्यागो बहानेबाजी की बीमारी
दु:ख भरी इस दुनिया में कुछ भी नहीं है अपने अनुरूप
जब चाहोगे ठंडी छाँव तो मिलेगी तुम्हें बड़ी करारी धुप
गर्मी जलाए या सर्दी ठिठुराए या बरसे कितनी भी बरसात
करते रहो तुम ईश्वरीय सेवा लेकर हाथ में बाबा का हाथ
माया रावण की जंजीरों से कोई देहधारी नहीं छुड़ा सकेगा
एक निर्बन्धन शिव बाबा ही तुम्हें घर की और

उड़ा सकेगा
समझो मेरे बच्चों कैसे बिगड़ी तुम्हारी बनी हुई तकदीर
देह अभिमान ने आकर बना डाला तुम्हें पूरा ही फ़कीर
स्वर्ग का सम्पूर्ण सुख पाना है तो ये इंतजाम कर लो
अविनाशी ज्ञान रत्नों से अपनी दोनों मुट्ठियाँ भर लो
एक बाप की याद में रहकर बनाओ एक रस अवस्था
श्रीमत पर चलकर बदलो अपनी पूरी जीवन व्ययस्था
ॐ शांति